Date :- 23/5/2020
Content Writer :-
Dr. Akhay Kumar Pathak
Deptt. of Economics,
Marwari College,
Darbhanga (LNMU)

Degree Part-II (Hons.)
Paper - II
Content of Paper :-
Micro Economics
Module :- 2

TOPIC :- ANALYSIS OF LAW OF DIMINISHING MARGINAL UTILITY
(सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम का विश्लेषण)

Scanned with CamScanner

उपयोगिता विश्लेषण के अंतर्गत तीन तरह के परिस्थितियों का अध्ययन किया जाता है, ये तीन परिस्थितियाँ क्रमशः : धनात्मक, शून्य एवं ऋणात्मक उपयोगिता विश्लेषण के नाम से अर्थशास्त्र के सिद्धांत के अंतर्गत अध्ययन किया जाता है। उपभोक्ता द्वारा उपभोग किए जाने की स्थिति में जब सीमान्त उपयोगिता शून्य पर पहुँचती है तो यह तृप्ति सीमा के रूप माना जाता है। लेकिन इस तृप्ति सीमा के बाद भी यदि उपभोग की प्रक्रिया जारी रहती है तो उपयोगिता अपने ऋणात्मक स्थिति में चली जाती है। इसी स्थिति को अर्थशास्त्र के क्षेत्र में सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम के रूप में जाना जाता है। इस नियम की सर्वप्रथम प्रो० गोसेन नामक अर्थशास्त्री ने चर्चा की एवं प्रो० मार्शल ने इसे एक सिद्धांत के रूप में व्याख्या की। इसलिए इस नियम को 'गोसेन के पहला नियम' के रूप में भी जाना जाता है।

प्रो० मार्शल ने इस सिद्धांत की व्याख्या करते हुए कहा है कि "अन्य बातें समान रहने पर किसी व्यक्ति के पास किसी वस्तु के मात्रा में वृद्धि होने से जो अतिरिक्त लाभ प्राप्त होता है वह उस वस्तु की मात्रा की प्रत्येक इकाई में वृद्धि के साथ-साथ घटता जाता है।" अर्थात् सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम से यह बताता है कि जब-जब हम किसी वस्तु की अतिरिक्त

Maharaza

इकाइयों का प्रयोग करते जाते हैं उससे प्राप्त होनेवाली उपयोगिता की मात्रा घटती जाती है तथा शून्य भी हो जाती है एक बिन्दु के बाद ऋणात्मक हो जाती है। तात्पर्य यह है कि ह्रासमान होती उपयोगिता के एक अतिरिक्त इकाई से प्राप्त होनेवाली अनुपयोगिता को सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम के नाम से जाना जाता है।

ह्रासमान उपयोगिता लागू होने के कारण :-

प्रो० बोल्डिंग ने ह्रासमान उपयोगिता लागू होने के दो प्रमुख कारणों की व्याख्या की है, जो निम्नांकित है :-

(i) प्रत्येक आवश्यकता विशेष को पूर्ण रूप से संतुष्ट किया जा सकता है :-

किसी भी वस्तु के लिए हमारी आवश्यकता कितनी भी तीव्र हो, उस वस्तु के उपभोग से उसे पूर्ण रूप से संतुष्ट किया जा सकता है यही कारण है कि जैसे-जैसे किसी वस्तु के अतिरिक्त इकाइयों का उपभोग करते जाते हैं, वैसे-वैसे उसकी आगे की इकाइयों से प्राप्त होनेवाली उपयोगिता क्रमशः कम होती जाती है।

(ii) वस्तुएं पूर्ण स्थानापन्न नहीं होती :-

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम लागू होने का दूसरा महत्वपूर्ण कारण यह है कि वस्तुएं पूर्ण रूप से एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग

Maharaza

Scanned with CamScanner

Date __/__/____ Page No.: ______

करते योग्य नहीं होती तथा इनका उचित अनुपात में ही उपयोग किया जाता है

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम की मान्यताएँ :-

(a) उपभोग की जानेवाली वस्तु की सभी इकाइयाँ गुण तथा परिमाण में समान रहनी चाहिए।

(b) उपभोग निरंतर क्रम में होनी चाहिए।

(c) उपभोक्ता की मानसिक स्थिति यथावत स्थिर रहनी चाहिए।

(d) वस्तु के इकाई का आकार पर्याप्त होना चाहिए।

(e) पूर्ण प्रतियोगिता होनी चाहिए जिससे वस्तु एवं उसके स्थानापन्नों की कीमतें स्थिर बना रहना चाहिए।

(f) उपभोक्ता की आय एवं उपभोग प्रवृत्ति में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

(g) उपभोक्ता की रुचि फैशन आदि में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

उपरोक्त मान्यताओं के आलोक में सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम पूर्ण रूप से लागू होता है। परन्तु इस नियम के कुछ अपवादों की चर्चा कुछ अर्थशास्त्रियों ने की है यद्यपि ये अपवाद वास्तविक अपवाद के

Date ___/___/___ Page No.: ______

रूप में नहीं माना जा सकता है, तथापि कुछ अपवादों की चर्चा निम्नांकित रूप में की जा सकती है।

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम के अपवाद :-

(i) दुर्लभ एवं प्रदर्शन की वस्तुओं पर यह नियम लागू नहीं होता।

(ii) सुन्दर गीत एवं सुन्दर कविताओं पर यह नियम लागू नहीं होता।

(iii) शराबी व्यक्ति पर यह नियम लागू नहीं होता।

(iv) वस्तु के उपभोक्ताओं के रुचि बदल जाने से यह नियम लागू नहीं होता।

(v) फैशन, दिखावटी उपभोग पर यह नियम लागू नहीं होता।

(vi) धन संचय के प्रवृत्ति वाले व्यक्ति पर यह नियम लागू नहीं होता।

उपर्युक्त अपवादों के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि इस नियम का कोई वास्तविक अपवाद नहीं है। अतः यह एक सर्वव्यापी नियम के रूप में अर्थशास्त्र के क्षेत्र में माना जाता है।

Scanned with CamScanner